डॉ. विजय मिश्र

हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित भौतिक विज्ञानी एवं संस्कृत विद्वान। कवि के तौर पर न्यू इंग्लैंड, दक्षिण एशिया के अनेक देशों में चर्चित एवं सफल यात्राएँ कीं। अनेक गरिमापूर्ण कवि सम्मेलनों में भागीदारी। विगत १८ बरसों से हार्वर्ड विश्वविद्यालय में सालाना भारतीय कविता पाठ का आयोजन कर रहे हैं।

सम्पर्क : १८०, बेडफोर्ड रोड, लिंकन, एमए. ईमेल : misra.bijoy@gmail.com

विमर्श

वाल्मीकि रामायण : आधुनिक विमर्श-१०

महर्षि विश्वामित्र

अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद सहयोग - संजीव त्रिपाठी

ऋषि शब्द की उत्पति का तो मालूम नहीं, लेकिन भारतीय धर्मग्रंथों में अधिकतर इसका उपयोग ज्ञानी व विद्वान् लोगों को संबोधित करने के लिए किया गया है। शायद यह बहुत पुरानी धारणा है कि कुछ लोगों में विद्वता दूसरों से ज्यादा रहती है या ऐसा मानना रहा होगा कि कुछ लोग अपने ज्ञान का उपयोग दूसरों की तुलना में अच्छी तरह करते हैं। ऋषियों का एक विशिष्ठ लक्षण था कि वह समाज से पृथक रहते थे। वे एकांत जीवनयापन कर सकते थे। एकान्तपन और शांति, उनको समाज का दूर से अवलोकन करने और उस पर उचित टिप्पणी करने का अवसर प्रदान करती थी। उनकी कृतियाँ स्रोत के रूप में समाज तक आयीं और हमको सिखलाया कि जीवन का आचार विचार कैसा होना चाहिये। ऋषियों के पास कवित्त प्रतिभा थी। ऐसा भी मान सकते हैं कि कवित्त प्रतिभावान लोगों ने समाज को देखा

ऋषियों का एक विशिष्ठ लक्षण था कि वह समाज से पृथक रहते थे। वे एकांत जीवनयापन कर सकते थे। एकान्तपन और शांति, उनको समाज का दूर से अवलोकन करने और उस पर उचित टिप्पणी करने का अवसर प्रदान करती थी। उनकी कृतियाँ स्रोत के रूप में समाज तक आयीं और हमको सिखलाया कि जीवन का आचार विचार कैसा होना चाहिये।

और जीवन और उसके व्यवहार के बारे में लिखा। कवि और ऋषि एक-दूसरे के पर्याय थे। शब्द कवि सभी रचनाकारों को संबोधित करने के लिए उभर के आया। सभी ऋषि कवि थे लेकिन यह जरूरी नहीं कि सभी कवि ऋषि हों। वाल्मीकि ऋषि थे और कवि भी, आदि विश्वामित्र ऋषि थे।

वैदिककाल में स्तुति रचनाकार ऋषि कहलाते थे और बाद के ग्रंथों में कुछ विशिष्ट ऋषियों के लिए महर्षि शब्द का

कई तरह से परीक्षा ली और पारितोषिक रूप में उन्हें नये-नये अस्त्र-शस्त्र दिये। उन्होंने राम को अस्त्र शस्त्रों के हर तरह से कार्यान्वयन के बारे में शिक्षित किया। उनका अत्यंत महत्वपूर्ण निर्देश यह था कि कोई भी आयुध अपना उद्देश्य तब तक हासिल नहीं करेगा जब तक कि उसके साथ किसी विशेष योगिक जप-तप द्वारा पाई गई कोई शक्ति न हो।

उपयोग हुआ जिनका दूसरों के तुलना में अति विशेष योगदान रहा था। महर्षि का अर्थ है 'महान ऋषि', यह सम्मान सामाजिक प्रतिष्ठा, कार्यकुशलता या श्रद्धा से संबन्धित हो सकता है। विश्वामित्र को वाल्मीकि ने महर्षि पद से संबोधित किया है, बाद में रचनाकारों ने वाल्मीकि को भी महर्षि के पद से सम्मानित किया है। विश्वामित्र ऐतिहासिक व्यक्तित्व है और उनका उल्लेख वैदिक स्तुतियों में भी आया हैं इसलिए भाषाविद् रामायण की घटनाओं को वैदिक समकालीन बताते हैं। वाल्मीकि ने विश्वामित्र को गुणी और अति महात्वाकांक्षी के रूप में प्रस्तुत किया है। हो सकता है कि विश्वामित्र ने वस्तुओं का स्वभाव और अभियांत्रिकी तरीकों के बारे में गहन अध्ययन किया हो। उन्होंने बाण को अभिकल्पित किया और उसके हवा में संचालन में उनको कुशलता थी। वह ब्राह्मणवादी सामाजिक व्यवस्था के विरोधी थे। वह विश्व को सीधे वैज्ञानिक तरीके से देखना चाहते थे। हालाँकि उनका विश्व के ऊपर ताकत के बल पर शासन करने का प्रयास सफल नहीं हुआ।

वाल्मीकि ने विश्वामित्र का परिचय रामायण में उस समय करवाया जब वह राजा दशरथ के दरबार में आकर राम और लक्ष्मण को अपने साथ ले जाने का अनुरोध करते हैं जिससे उनके आश्रम की रक्षा दो राक्षसों मारीच और सुबाहु से हो सके। विश्वामित्र विंध्य पर्वत श्रृंखला पर सिद्धाश्रम नामक जगह पर गये जो जप, तप और यज्ञ के लिए बहुत पवित्र मानी जाती थी। राक्षसों को अपने क्षेत्र में बाहरी लोगों का अतिक्रमण बिलकुल पसंद नहीं था और इसलिए वो उनको परेशान करने और वहाँ से भगाने के लिए नये-नये तरीके अपनाते थे। ऋषियों को दक्षिण पर्वत श्रृंखला का एकांत वातावरण बहुत पसंद था। वाल्मीकि ने इस बात को पूरी तरह नहीं समझाया कि विश्वामित्र ऐसा क्यों सोचते थे कि राक्षसों से उनके आश्रम की रक्षा केवल राम ही कर सकते हैं। हो सकता है कि उस समय देश में लोगों को युवाओं के साहस पर भरोसा हो या विश्वामित्र को अपनी दिव्य दृष्टि के कारण राम के आगे के जीवन के बारे में ज्ञात हो। हो सकता है कि वह बिना बताये राम को आने वाले कार्य के लिए तैयार कर रहे हों।

राम की आयु केवल पंद्रह वर्ष की थी जब विश्वामित्र ने राजा दशरथ से उनके पुत्र को अपने साथ ले जाने के लिए कहा था। विश्वामित्र अपने क्रोध के लिये भी जाने जाते थे और उनको आशा थी कि उनकी बात मानी जायेगी। यह सर्वविदित था कि उनके पास किसी को भी श्राप देने की शक्ति थी और जिससे किसी को भी तबाह कर सकते थे। कुछ विशेष योगिक शक्तियों से किसी का कहा हुआ शब्द सच हो सकता है, सब लोग जानते थे कि विश्वामित्र अपनी शक्तियों का प्रयोग किसी को श्राप देने के लिये भी कर सकते हैं। वह किसी को उसकी अंतर्शक्ति और सहनशीलता की परीक्षा लेने के लिए भी श्राप दे देते थे और यदि उनके श्राप के प्रभाव से बच गये तो वरदान भी देते थे। यह तो नहीं मालूम कि उनके श्राप के प्रभाव से कौन कौन लोग जीवित नहीं बचे, लेकिन राजा हरिश्चंद्र को पहिले उन्होंने श्राप दिया था और बाद में वरदान। विश्वामित्र अपनी शक्ति की परीक्षा करने के लिये घूमते रहते थे। उनको अपनी शक्तियों का अहसास था लेकिन योगिक जप, तप और यज्ञ से और भी ज्यादा हासिल करना चाहते थे।

ऐसा संभव है कि लम्बी और कठिन तपस्या से विश्वामित्र थक चुके हों और अपनी शक्तियाँ और ज्ञान किसी योग्य पुरुष को देना चाहते हों। राम को शिक्षा देना और सीता के साथ राम का विवाह उनका अंतिम कार्य था और इसके बाद वह निवृत्त हो हिमालय चले गये। जनक के राज्य की यात्रा के दौरान विश्वामित्र ने राम की कई तरह से परीक्षा ली और पारितोषिक रूप में उन्हें नये-नये अस्त्र-शस्त्र दिये। उन्होंने राम को अस्त्र शस्त्रों के हर तरह से कार्यान्वयन के बारे में शिक्षित किया। उनका अत्यंत महत्वपूर्ण निर्देश यह था कि कोई भी आयुध अपना उद्देश्य तब तक हासिल नहीं करेगा जब तक कि उसके साथ किसी विशेष योगिक जप-तप द्वारा पाई गई कोई शक्ति न हो। इस तकनीक में विश्वामित्र को महारथ हासिल था और उन्होंने राम को अपने संरक्षण में इस कला को सिखाया। वह यह भी आश्वस्त करना चाहते थे कि राम ने यह सब तकनीकें अच्छी तरह सीख ली हैं और इसके लिए वह राम को इनका युद्ध में प्रयोग कराते थे।

राम की तरह विश्वामित्र के पिता गाधी भी यज्ञ फलस्वरूप पैदा हुये थे। गाधी के पिता कुस एक साधु और ज्ञानी पुरुष थे। अपने वंश के कारण विश्वामित्र कुसिका कहलाते थे। विश्वामित्र के एक बड़ी बहन थी जिनका नाम सत्यवती था और उनका विवाह रुचिका मुनि से हुआ था। विश्वामित्र मानते थे कि उनकी बड़ी बहन ने हिमालय की पवित्र नदी कौसिकी की तरह जीवन जिया। वह भी कौसिकी नदी के पास रहते थे जहाँ उनको अपनी बहन के सामीप्य की अनुभूति होती थी। उनको आत्म संयम और तप के द्वारा नई-नई शक्तियाँ अर्जित करने की इच्छा थी। वह कई पवित्र स्थानों पर जप-तप और ध्यान करने गये।

विश्वामित्र राजवंशी स्वाभाव के थे और उन्होंने दूसरों पर राज करने का विचार कभी नहीं छोड़ा। ऋषि प्रवृत्ति के मनुष्य के लिये हालाँकि यह उचित नहीं है लेकिन विश्वामित्र इसका अपवाद थे। अपने हठ से वह एक बड़ी सेना एकत्र करने में सफल रहे और विश्व विजय के अभियान पर निकल पड़े। यात्रा के दौरान उनका मुकाबला वशिष्ठ ऋषि से हुआ जिन्होंने उनको और उनकी सेना को एक जादुई छड़ी से बुरी तरह हरा दिया। वशिष्ठ ब्रह्मर्षि कहलाते थे और उनके पास ऐसी अदृश्य शक्तियां थीं जो विश्वामित्र के पास नहीं थी। अपनी अज्ञानता जानकर विश्वामित्र पुनः तपस्या के रास्ते पर चले गये। उस रास्ते पर भी विश्वामित्र अपनी सांसारिक आशक्ति की कमियों के कारण विफल रहे।

ऋषि विश्वामित्र स्वभाव से जिद्दी थे और उनको अपनी शक्तियाँ का प्रदर्शन करना पसंद था। उन्होंने गुरुत्व और प्रक्षेप्य विद्या में महारथ हासिल कर ली वह किसी भी मनुष्य को बाह्य अन्तरिक्ष में भेज सकते थे। हो सकता है कि यह मनुष्य के अंतर्ग्रहीय यात्रा का प्रथम प्रयास हो। हो सकता है कि उन्होंने ग्रहों के प्रक्षेप पथ का आंकलन कर लिया हो, लेकिन लगता है कि उनको छुद्र ग्रह पट्टी की जानकारी नहीं थी। राजा त्रिसंकू छुद्र ग्रह पट्टी में फंस गये थे और न ही वह आगे जा पाये और न ही पीछे आ सके। ऐसा लगता कि अभी भी छुद्र ग्रह पट्टी के साथ घूम रहे हों। भारतीय भाषाओं में एक नया शब्द 'त्रिसंकू' जुड़ गया, इसका आशय है उलझी हुई स्थिति।

ऋषि विश्वामित्र में अच्छा गुण यह था कि वह अपने जानने वाले लोगों की आपदा के समय मदद के लिये तैयार रहते थे। एक बार उनका भतीजा सुनाह्सेपा नर बलि के लिये पकड़ लिया गया और अचानक वह नदी के पास ऋषि से मिला। उन्होंने अपने भतीजे को एक विशेष मंत्र सिखाया था जिससे स्वर्ग में शक्तियों को खुश किया जा सके और बलि स्तम्भ से छूटा जा सके। बाद में उन्होंने राम के साथ मिलकर अहिल्या को उनके पति की श्राप से मुक्ति की तकनीक बनायी थी। उनकी जीवन की तकनीकों और जीवन को दीर्घायु बनाने वाले मन्त्रों में कुशलता थी। राम के अलावा और किसी विश्वामित्र के विद्यार्थी का वाल्मीकि ने वर्णन नहीं किया है।

> ऋषि विश्वामित्र स्वभाव से जिद्दी थे और उनको अपनी शक्तियाँ का प्रदर्शन करना पसंद था। उन्होंने गुरुत्व और प्रक्षेप्य विद्या में महारथ हासिल कर ली वह किसी भी मनुष्य को बाह्य अन्तरिक्ष में भेज सकते थे।

ब्राह्मणी शक्तियों की जानकरी होने के कारण उनका प्रमुख उद्देश्य साथियों से ब्रह्मर्षि का पद हासिल करना और ब्रह्मा से आशीर्वाद लेना था। वह चाहते थे कि उनके आत्मसंयम और तपस्या से खुशकर भगबान ब्रह्मा प्रगट होकर उन्हें आशीष दें। विश्वामित्र का रास्ता आसन नहीं था। वह अपनी कई कमियों के कारण कई बार असफल हुये। लगातार पूरी लगन से प्रयासरत रहना ही उनकी विशेष सफलता मानी जा सकती है।

विश्वामित्र की नाटकीय ढंग से रामायण में आने से कहानी रोचक दिशा में चली गयी। राम का ऋषि विश्वामित्र के साथ वन में जाना व अस्त्र शस्त्र विद्या की प्राप्ति और अत्यंत उपयोगी मंत्रों का सीखना रामायण की कहानी को और भी रोमांचक बनाता है। ऋषि विश्वामित्र एक अच्छे गुरु थे और उन्होंने राम को इतिहास और भूगोल की जानकारी दी। रामायण की कहानी से ऐसा प्रतीत होता है कि विश्वामित्र को राम के अदृश्य विलक्षण गुणों का ज्ञान था और उन्होंने उनको प्रशिक्षण द्वारा और मजबूत बनाकर आगे आने वाले बड़े कार्य के लिये तैयार किया था।

ईश्वर सबका भला करे! ■